दो रुपये में बेची मधुबनी पेंटिंग अब लाखों में

कानपुर, वरिष्ठ संवाददाता। राष्ट्रपति अवार्ड से सम्मानित और पद्मश्री के लिए नामित मधुबनी पेंटिंग के कलाकार शांति देवी और शिवान पासवान ने कहा कि कला का न कोई धर्म होता है और न ही कोई जाति। 1977 में पहली पेंटिंग मात्र दो रुपये में बेची लेकिन आज लाखों में बिकती हैं। जापान, दुबई समेत दुनिया के एक दर्जन देशों में कला को स्थापित करने वाली शांति देवी कहती हैं कि पहले हमारा देश सबकी नकल करता था, आज दुनिया हमारे देश की नकल कर रही है।

सर पदमपत सिंहानिया एजुकेशन सेंटर में 05 दिसंबर से चल रही मधुबनी पेंटिंग कार्यशाला यहां 28 तक चलेगी। शांति देवी और शिवान पासवान इन बच्चों को इस कला से पारंगत कर रहे हैं। प्रिंसिपल भावना गुप्ता के साथ पत्रकारों से वार्ता में उन्होंने कहा कि वे केवल नवीं कक्षा तक पढ़ी हैं और 10वीं क्लास में शादी हो जाने के कारण आगे नहीं पढ़ सकीं। पर सास से झगड़ा कर मधुबनी कला सीख ली।

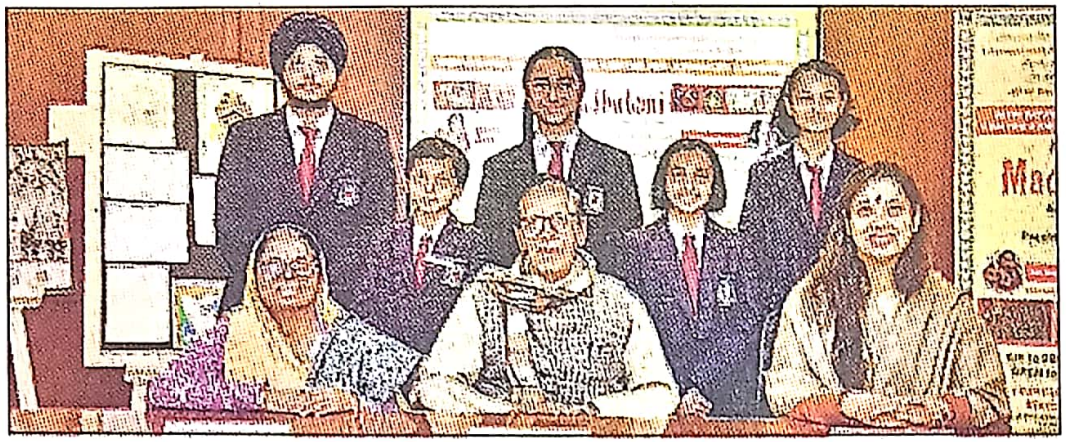

सर पदमपत सिंहानिया एजुकेशन सेंटर में विद्यार्थियों के संग मौजूद कलाकार।

शांति देवी का कहना है कि उन्हें दिवंगत प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी से लेकर जी 20 का नेतृत्व कर रहे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी तक का आशीर्वाद मिला है। जी 20 में उन्होंने हमारी पेंटिंग देखी जिसमें हमने प्रधानमंत्री के मित्र अमेरिका के राष्ट्रपति और चंद्रयान की सफलता को दर्शाया था। उन्होंने मधुबनी पेंटिंग की कला के बारे में कहा कि इसमें कचनी, भरनी, गोदना, तांत्रिक और गेरु गोबर प्रकार की पेंटिंग होती है। तांत्रिक और टेटू के कारण गोदने की कला अब कम हो गई है। उन्होंने दावा किया कि 50 हजार कलाकारों को वह तैयार कर चुकी हैं। 28 को स्कूल में प्रदर्शनी लगाई जाएगी।